25/2

2005

HINDI

Paper II

(Literature)

Time : 3 Hours] *[Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt all questions from Part A, B and C. In Part D attempt any ***three*** *questions out of five questions.*

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answer must be written in Hindi.

PART A

5×4=20

निम्नलिखित पर लगभग 50 शब्दों में टिप्पणियाँ लिखिए । प्रत्येक प्रश्न के 5 अंक हैं ।

1. (क) कबीर की गुरु-महिमा

   (ख) सूरदास की गोपियाँ

   (ग) 'पूस की रात' का कथ्य

   (घ) 'अंधेर नगरी' का व्यंग्य

PART B

$10 \times 10 = 100$

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए । प्रत्येक प्रश्न के 10 अंक हैं ।

1. कबीर के समाजसुधार-संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए ।

2. 'भ्रमरगीत' में सूरदास का प्रतिपाद्य सगुण की निर्गुण पर विजय स्थापित करना था ।' — इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

3. 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड का महत्त्व विशद कीजिए ।

4. 'कामायनी' के श्रद्धा की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

5. 'सरोज-स्मृति' के आधार पर निराला की शोकाकुलता को स्पष्ट कीजिए ।

6. 'अंधेरे में' कविता के कथ्य को विशद कीजिए ।

7. 'ईदगाह' कहानी के बालमनोविज्ञान को स्पष्ट कीजिए ।

8. 'क्रोध' निबंध में व्यक्त वैचारिकता का विवेचन कीजिए ।

9. 'चन्द्रगुप्त' की अलका का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

10. 'शेखर : एक जीवनी' की शशि की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

PART C

15×6=90

निम्नलिखित पद्यांशों में से संदर्भ सहित व्याख्या करते हुए उसके काव्यगत सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए (लगभग 150 शब्दों में) । प्रत्येक प्रश्न के 15 अंक हैं ।

1. काहे को रोकत मारग सूधौ ?
मुनहु मधुप ! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यों रूधौ ?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामधन जू धौ ?
बेद पुरान सुमृति सब ढूँढौ जुवतिन जोग कहूँ धौ ?
ताको कहा परेखो कीजै, जानत छाछ न दूधौ ?
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत ऊधौ ?

2. चरन पीठ करुनानिधान के ।
जनु जुग जामिन प्रजा प्रान के ।।
संपुट भरत सनेह रतन के ।
आखर जुग जनु जीव जतन के ।।
कुल कपाट कर कुसल करम के ।
विमल नयन सेवा सुधरम के ।।
भरत मुदित अवलंब लहे तें ।
अस सुख जस सिय राम रहे तें ।।

3. गुरु गोविंद तो एक है, दूजा यहु आकार ।
आपा मेट जीवत मरै, तो पावै करतार ।।
जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहीं राम ।
ते नर इस संसार में, उपजि भये बेकाम ।।

4. मैंने तो कभी यह दावा नहीं किया रायसाहब ! मैं तो इतना ही जानता हूँ कि जिन औज़ारों से लोहार काम करता है, उन्हीं औज़ारों से सोनार नहीं करता । क्या आप चाहते हैं, आप भी उसी दशा में फलें-फूलें जिसमें बबूल या ताड़ ? मेरे लिए धन केवल उन सुविधाओं का नाम है, जिनसे मैं अपना जीवन सार्थक कर सकूँ ! धन मेरे लिए बढ़ने और फलने-फूलने वाली चीज़ नहीं, केवल साधन है ।

5. भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभास-मात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते दूत, वह किसी बलवान् की इच्छा का क्रीडाकंदुक नहीं बन सकता — तुम्हारा राजा अभी झेलम भी नहीं पार कर सका, फिर भी जगद्विजेता की उपाधि लेकर जगत् को वंचित करता है । मैं लोभ से, सम्मान से या भय से किसी के पास नहीं जा सकता ।

6. दुःख उसी की आत्मा को शुद्ध करता है, जो उसे दूर करने की कोशिश करता है । शुद्धि दूसरे के साथ दुःखी होने में नहीं, दूसरे के स्थान पर दुःखी होने में है ।

PART D

$30 \times 3 = 90$

*निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के लगभग 300 शब्दों में उत्तर लिखिए । प्रत्येक प्रश्न के 30 अंक हैं ।*

1. 'तुलसी का 'रामचरितमानस' समन्वय साधना का श्रेष्ठ उदाहरण है ।' — युक्तियुक्त विवेचन कीजिए ।

2. कामायनी के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डालिए ।

3. 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' के आधार पर मुक्तिबोध की काव्य-संवेदना और भाषाशैली का विवेचन कीजिए ।

4. 'गोदान में पूरे भारतवर्ष का ग्राम-जीवन प्रतिबिंबित हुआ है ।' — इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

5. 'अज्ञेय जी ने शेखर के माध्यम से चतुर्मुखी विद्रोह का आख्यान किया है ।' — इस विधान को शेखर के चरित्र-चित्रण के साथ समझाइए ।